(घाटियों का स्वर)

इजी पेने पेबेरे

(न्यीशी लोकगीत)

यातो मूरी

इजी पेने पेबेरे, हई बीने बिबेरे
इजी पेने पेबेरे, हई बीने बिबेरे
चीजी दोजी जीलेनरे, चिया, दोंया न्यागरेन रे
बुरी-बूतेम मोला जू लाबो सिकम जोला जू
लाबो जोला जू...

इजी पेने पेबेरे, हई बीने बिबेरे
इजी पेने पेबेरे, हई बीने बिबेरे
इची डोली पेमा डोबे, डेरे यारे रमा डोबे
बुरी-बूतेम मोला जू लाबो सिकम जोला जू
लाबो जोला जू...

इजी पेने पेबेरे, हई बीने बिबेरे
इजी पेने पेबेरे, हई बीने बिबेरे
अन्यी बर्मे अकुम तो, आबी बेरे आकुम तो
चिंत पते हगला जू, न्यिर्मेन्न सोमेन मेनला जू
बुरी-बूतेम मोला जू लाबो सिकम जोला जू
लाबो जोला जू...

प्रसंग

इस लोकगीत को बचपन में सुना करती थी। इस लोकगीत के अनुसार काफी पहले एक महामारी आई। गाँव में प्रतिदिन लोगों की मृत्यु होने लगी और देखते-देखते गाँव की आबादी बहुत कम हो गई। इंसान के साथ-साथ पशु-पक्षी भी मर रहे थे तथा खेतों के फसलों का नुकसान होने लगा था। गाँव के लोगों का जीवन अशांत हो गया और सभी के लिए जीना अब पहले की तरह आसान नहीं रहा। बस्ती के लोगों ने सामूहिक रूप से पूजा और अनुष्ठान करने का निर्णय लिया। सबने मिलकर 'युल्लो उयी' पूजा को शुरू किया। इस पूजा-अनुष्ठान का परिणाम यह हुआ कि लोग मृत्यु से बच गए। फसल भी अच्छी होने लगी। पशु-पक्षियों के ऊपर से भी संकट

टल गया। लोगों का आज भी मानना है कि ऐसा 'युल्लो उयी' पूजा-अनुष्ठान करने के कारण हुआ। इस विधि को लेकर आमजन में गहरी आस्था का भाव है जिसे वे 'इजी पेने पेबेरे' गीत के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

भावार्थ

इस गीत में यह भाव बताया गया है कि सूर्य हर सुबह इस सौर-मंडल में उगेगा और पृथ्वी प्रकाशित होगी। धरती पर नालों, नदियों का पानी सतत इसी तरह बहता रहेगा। वनस्पतियों और जीवों सहित मानव जीवन को दीर्घायु प्राप्त होगा। सूर्य का प्रकाश निरंतर पृथ्वी पर पड़ता आया है। माता चंद्रमा और पिता सूर्य की उपस्थिति में सभी पिण्ड एक-दूसरे का परिभ्रमण कर रहे हैं। इन सबकी निर्बाध गति के लिए हम सभी को मिल-जुलकर बुरी-बूत मनाना चाहिए। मानव जीवन सहित सभी भौतिक और अभौतिक चीजों के इसी तरह क्रियाशील बने रहने के लिए मिलकर इस त्यौहार को मनाएं। मानव जाति और वन्य-जीव, वनस्पति आदि के लिए; अकाल, सूखा और किसी भी तरह के महामारी अथवा अन्य किसी प्राकृतिक आपदा आदि से लोगों के जीवन को मुक्त करने के लिए तथा सबके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि को लेन के लिए इस त्यौहार को सभी मिलकर मनाएं। यह त्यौहार गाँव के लोगों को संकेत देता है कि सर्दियों के बाद बसंत का मौसम आ रहा है। इसलिए ग्रामीणों को झूम की खेती के लिए तैयार हो जाना चाहिए। इस मौके पर गाँव के सभी भाई-बहन आते हैं और सब मिलकर राइस बियर और अन्य पेय पदार्थों का सेवन करते हैं। यह दिन सभी के लिए प्रसन्नता और आनंद का अवसर है।

*(**लेखकीय परिचय**: यातो मूरी राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से परास्नातक पूरी कर चुकी हैं।*
मोबा: 9612481439, ई-मेल : muriyato@gmail.com)